विषय-सूची

प्राक्कथन
आमुख
प्रस्तावना
अध्याय सत्तर
भगवान् कृष्ण की दैनिक चर्या
अध्याय का सारांश
पक्षियों की चहचहाहट से भगवान् कृष्ण का जागना
भगवान् द्वारा स्वयं का ध्यान किया जाना
उदय होते सूर्य, गुरुजनों तथा ब्राह्मणों की कृष्ण द्वारा पूजा
भगवान् द्वारा अपने मंत्रियों का सत्कार
अन्त:पुर की स्त्रियों द्वारा कृष्ण को प्रेममयी लजीली चितवनों से देखना
सुधर्मा सभा में भगवान् यदुओं के बीच तारों के मध्य चन्द्रमा समान सुशोभित
सभा में एक दूत का आगमन
दूत द्वारा कृष्ण को बीस हजार बन्दी राजाओं की प्रार्थना बतलाना
''हे प्रभु! हमने आत्मा के असली सुख का बहिष्कार किया है''
''कृपया जरासन्ध को हरा कर, हमें मुक्त कराएँ''
नारद मुनि का सभा में प्रकट होना तथा कृष्ण की प्रशंसा करना
नारद का कथन, ''हे प्रभु! राजा युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने का आशीर्वाद दें''
भगवान् कृष्ण का श्री उद्धव से सलाह लेना
अध्याय इकहत्तर
भगवान् की इन्द्रप्रस्थ यात्रा
अध्याय का सारांश
राजाओं को मुक्त करने तथा युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने में
सहायता करने की उद्धव की कृष्ण को सलाह
''भीम ब्राह्मण-वेश में जरासन्ध से युद्ध करने की याचना करें''
''बन्दी राजाओं की पत्नियाँ तथा गोपियाँ आपका यशोगान करती हैं''
भव्य जुलूस के साथ भगवान् का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान
कृष्ण की रानियाँ सोने की पालकियों में सवार
बन्दी राजाओं के दूत से कृष्ण का वायदा कि जरासन्ध का वध होगा
राजा युधिष्ठिर द्वारा भावविभोर होकर भगवान् का आलिंगन
कृष्ण का आलिंगन किये जाने पर भीम का सहर्ष हँसना
सुन्दर इन्द्रप्रस्थ नगरी का वर्णन

कृष्ण को देखने के लिए नगर की स्त्रियों का अटारियों पर चढ़ना
रानी कुन्ती द्वारा अपने भतीजे कृष्ण का स्नेहपूर्ण आलिंगन
द्रौपदी द्वारा कृष्ण की सभी रानियों की पूजा करना
खाण्डव वन को जलाने की अनुमति देकर कृष्ण तथा अर्जुन द्वारा
अग्नि की तुष्टि किया जाना

अध्याय बहत्तर

जरासन्ध असुर का वध

अध्याय का सारांश
राजा युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ सम्पन्न किये जाने के अपने प्रयास
के हेतु कृष्ण से आशीर्वाद माँगना
''आपकी भक्ति की शक्ति को लोग देखें''
समस्त राजाओं को जीतने के बाद ही राजसूय यज्ञ करने की भगवान् की युधिष्ठिर को सलाह
भीम, अर्जुन, सहदेव तथा नकुल द्वारा जरासन्ध के अतिरिक्त समस्त राजाओं का जीता जाना
भीम, अर्जुन तथा कृष्ण का ब्राह्मण वेश में जरासन्ध से भेंट करने के लिए गिरिव्रज जाना
इन ब्राह्मणों का जरासन्ध से भीख माँगना
शंकालु जरासन्ध द्वारा अतिथियों को मनवांछित वर माँगने की स्वीकृति
कृष्ण द्वारा जरासन्ध से द्वन्द्व के लिए याचना भीम तथा जरासन्ध का गदायुद्ध
दोनों योद्धा क्रुद्ध हाथियों जैसे थे
भीम को कृष्ण द्वारा संकेत कि जरासंध को कैसे मारा जाये ?
भीमसेन द्वारा जरासंध का दो भागों में चीरा जाना
कृष्ण द्वारा जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगध का राजा बनाया जाना

अध्याय तिहत्तर

बन्दी-गृह से छुड़ाये गये राजाओं को कृष्ण द्वारा आशीर्वाद

अध्याय का सारांश
बीस हजार राजाओं द्वारा बन्दी-गृह से छूटने पर कृष्ण का दर्शन
मुक्त किये गये राजाओं द्वारा स्तुतियाँ
''अब हम कभी भी मृगतृष्णा तुल्य राज्य की कामना नहीं करेंगे''
भगवान् कृष्ण का राजाओं से कहना कि अब से वे उनकी भक्ति में दृढ़ रहेंगे
भगवान् का कहना कि ''जीवन जीते समय सदैव अपने मन मुझमें स्थिर रखो''
सहदेव द्वारा राजाओं को राजसी उपहारों से सम्मानित करना
कृष्ण द्वारा राजाओं को उनके राज्यों में वापस भेजना
कृष्ण, अर्जुन तथा भीम की इन्द्रप्रस्थ वापसी
प्रेम तथा कृतज्ञता वश युधिष्ठिर गद्गद तथा अवाक्

अध्याय चौहत्तर

राजसूय यज्ञ में शिशुपाल का उद्धार

अध्याय का सारांश
राजा युधिष्ठिर द्वारा कृष्ण की स्तुति
यज्ञ सम्पन्न करने के लिए राजा द्वारा उपयुक्त पुरोहितों का चुनाव
यज्ञ देखने के लिए सभी दिशाओं से भीड़ का आगमन
इन्द्र, ब्रह्मा, शिव तथा बहुत-से अन्य देवताओं का आगमन
अग्रपूजा किसकी हो ?
सहदेव का कहना कि ''हम कृष्ण की अग्रपूजा करें''
सभी सन्त पुरुष सहदेव से सहमत
कृष्ण के प्रति दिखाये गये सम्मान से शिशुपाल क्रुद्ध
''गुणहीन व्यक्ति पूजा के योग्य कैसे ?''
कृष्ण का मौन रहना तथा अनेक लोगों का सभा से बहिर्गमन
कृष्ण का अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का शिरच्छेद
शिशुपाल की आत्मा का भगवान् के शरीर में लीन होना
राजा युधिष्ठिर द्वारा यज्ञ की समाप्ति पर अवभृथ स्नान
सभा में देवराज के समान युधिष्ठिर का तेज
श्रोताओं के लिए वरदान

अध्याय पचहत्तर

दुर्योधन का मानमर्दन

अध्याय का सारांश
राजसूय यज्ञ में भीम, अर्जुन, कृष्ण तथा अन्यों द्वारा आवश्यक सेवा कार्य
नर्तकों का प्रसन्न होकर नाचना तथा गवैयों द्वारा वाद्यों के साथ सहगान
पुरुषों तथा स्त्रियों द्वारा परस्पर तरल लेप लगाकर क्रीड़ा करना
सम्राट युधिष्ठिर का विविध कृत्यों से घिरे राजसूय यज्ञ
के ही समान तेजस्वी दिखना
युधिष्ठिर द्वारा सबों को उपहार दिया जाना
सबों के विदा हो जाने पर कृष्ण तथा अन्य लोगों से
थोड़ा समय और रुकने के लिए युधिष्ठिर की विनती
दुर्योधन को युधिष्ठिर के ऐश्वर्य से ईर्ष्या
मोहग्रस्त दुर्योधन का जल में गिरना

अध्याय छिहत्तर

शाल्व तथा वृष्णियों के मध्य युद्ध

अध्याय का सारांश
शाल्व द्वारा प्रतिदिन एक मुट्ठी धूल फाँककर शिवजी की पूजा
मयदानव द्वारा शाल्व के लिए सौभ यान का निर्माण
शाल्व तथा उसकी सेना द्वारा द्वारका का घेराव
अग्रणी वृष्णि योद्धाओं का नगर की रक्षा हेतु बाहर आना

भगवान् प्रद्युम्न द्वारा शाल्व के जादू का विनाश
शाल्व के विमान का अलात-चक्र के समान इधर उधर घूमना
द्युमान द्वारा प्रद्युम्न की छाती पर आघात
दारुक द्वारा प्रद्युम्न को युद्धभुमि से हटा ले जाना
प्रद्युम्न द्वारा दारुक को डाँटफटकार
अध्याय सतहत्तर
कृष्ण द्वारा असुर शाल्व का वध
अध्याय का सारांश
प्रद्युम्न द्वारा द्युमान का बाण द्वारा सिर अलग किया जाना
भयावने युद्ध का सत्ताईस दिनों तक चलना
कृष्ण का द्वारका लौटना और युद्ध क्षेत्र के लिए प्रस्थान
शाल्व द्वारा कृष्ण की बाँह पर बाण से प्रहार और उनके हाथ से शाङ्र्ग धनुष का गिरना
शाल्व द्वारा भगवान् का अपमान
असुर का अन्तर्धान होना और दूत द्वारा बुरा समाचार लाया जाना
शाल्व द्वारा छद्म वसुदेव का सिर काटा जाना
शाल्व का वध करने की कृष्ण द्वारा तैयारी
कृष्ण मोह के वशीभूत कैसे हो सकते हैं ?
कृष्ण की गदा से ध्वस्त सौभ-विमान का समुद्र में गिरना
कृष्ण का अपने सुदर्शन चक्र द्वारा शाल्व का शिरच्छेद
अध्याय अठहत्तर
दन्तवक्र, विदूरथ तथा रोमहर्षण का वध
अध्याय का सारांश
अपने मित्रों की मृत्यु का बदला लेने के उद्देश्य से
दन्तवक्र का कृष्ण पर आक्रमण
अपनी गदा से कृष्ण द्वारा दन्तवक्र का वध
विदूरथ का भगवान् पर आक्रमण करना और मारा जाना
भगवान् कृष्ण का वृन्दावन वापस आना
कृष्ण की परवर्ती लीलाओं का अनुक्रम
तीर्थयात्रा के लिए निकले बलराम का नैमिषारण्य पहुँचना
रोमहर्षण द्वारा अपमानित किये जाने पर बलराम का क्रुद्ध होना
कुश के तिनके से बलराम द्वारा रोमहर्षण की हत्या
ब्राह्मणों के अनुरोध पर बलराम का अपने पापों के लिए
प्रायश्चित्त करने के लिए राजी होना
बलराम द्वारा रोमहर्षण के पुत्र को सभा का नया वक्ता बनाया जाना
बलराम से बल्वल असुर को मारने तथा एक वर्ष की तीर्थ यात्रा पर जाने का अनुरोध
अध्याय उन्यासी

भगवान् बलराम की तीर्थ यात्रा

अध्याय का सारांश
भयावने बल्वल असुर को मारने के लिए बलराम द्वारा
अपने हल तथा गदा का आवाहन
असुर के मारे जाने पर ऋषियों द्वारा बलराम का सम्मान
बलरामजी का तीर्थयात्रा के लिए प्रस्थान
भारतवर्ष की परिक्रमा के बाद बलरामजी का प्रभास लौटना
भीम तथा दुर्योधन को गदायुद्ध बन्द करने की बलरामजी की सलाह
बलरामजी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों को आशीर्वाद
श्रोताओं को आशीष

अध्याय अस्सी

द्वारका में भगवान् श्रीकृष्ण से ब्राह्मण सुदामा की भेंट

अध्याय का सारांश
भगवान् के गुणों का वर्णन करने वाली ही वाणी असली है
असली आँखें वे हैं, जो एकमात्र भगवान् का दर्शन करती हैं
विद्वान, शान्त, आत्मसंयमी, तपस्वी तथा दरिद्र ब्राह्मण सुदामा
सुदामा की पत्नी उससे कृष्ण के पास द्वारका जाकर दान माँगने के लिए याचना करती है
सुदामा का द्वारका के लिए प्रस्थान
महल में प्रवेश करने पर भगवान् द्वारा सुदामा का आलिंगन
अपने पुराने मित्र से मिलने पर कृष्ण भावाभिभूत
कृष्ण तथा सुदामा द्वारा सान्दीपनि मुनि की पाठशाला में बिताये गये दिनों का स्मरण
प्रामाणिक गुरु ईश्वर के ही समान
कृष्ण और सुदामा के ईंधन लेने गए समय असामयिक तूफान का आना
सान्दीपनि मुनि का कृष्ण तथा सुदामा को विपत्ति में फँसा देखना
असली शिष्यों का कर्तव्य है कि अपना सर्वस्व अपने गुरु को दे दें
शिष्य के रूप में कृष्ण की भूमिका मानवोचित लीलाओं के अनुरूप

अध्याय इक्यासी

भगवान् द्वारा सुदामा ब्राह्मण को वरदान

अध्याय का सारांश
प्रेमपूर्वक भेंट की गई किसी भी वस्तु से भगवान् प्रसन्न होते हैं
भगवान् द्वारा सुदामा की तन्दुल की तुच्छ पोटली का छीना जाना
कृष्ण का एक मुट्ठी तन्दुल खाना
सुदामा ऊपरी तौर से रिक्तहस्त घर के लिए रवाना
सुदामा द्वारा कृष्ण की कृपा का चिन्तन
सुदामा ब्राह्मण का आश्चर्यजनक ऐश्वर्य

ब्राह्मण-पत्नी अब देवी जैसी लग रही थीं
सुदामा का सोचना कि कृष्ण अपनी कृपा की वर्षा बादल की भाँति करते हैं
''मैं जन्म-जन्मांतर भगवान् की प्रेमपूर्वक सेवा करता रहूँ''
कृष्ण द्वारा ब्राह्मणों को अपने स्वामियों जैसा मानना
श्रोताओं को आशीष

अध्याय बयासी

वृन्दावनवासियों से कृष्ण तथा बलराम की भेंट

अध्याय का सारांश
सूर्यग्रहण के समय लोगों का समन्त-पञ्चक जाना
प्राय: सारे वृष्णियों का कुरुक्षेत्र की गोष्ठी में भाग लेना
वृष्णियों तथा उनके पुराने मित्रों का पुनर्मिलन
महारानी कुन्ती अपने पुराने बिछड़े सम्बन्धियों से मिलकर सान्त्वना प्राप्त करती हैं
वसुदेव द्वारा कुन्ती को आश्वासन देना
भगवान् कृष्ण के सौन्दर्य से सभी स्तम्भित
कृष्ण के यश, वाणी तथा चरणकमलों की महिमा
नंद महाराज को देखकर वृष्णिजन पुलकित
नन्द तथा यशोदा से मिलकर कृष्ण तथा बलराम गद्गद
रोहिणी तथा देवकी द्वारा माता यशोदा की प्रशंसा
गोपियों द्वारा अपने हृदयों के भीतर कृष्ण का आलिंगन
कृष्ण द्वारा गोपियों को सान्त्वना प्रदान करना
''अपने प्रेम से तुम लोगों ने मुझे पा लिया है''
गोपियाँ मिथ्या अहंकार के समस्त कल्मष से मुक्त
कृष्ण के चरणकमलों का निरन्तर स्मरण करते रहने की गोपियों की प्रार्थना

अध्याय तिरासी

कृष्ण की रानियों से द्रौपदी की भेंट

अध्याय का सारांश
जिन्होंने कृष्ण के चरणकमलों के यश का एक बार भी
श्रवण किया है, उन्हें विपत्ति कैसे घेर सकती है ?
द्रौपदी द्वारा कृष्ण की प्रमुख रानियों से उनके कृष्ण के साथ
ब्याह की बातें पूछे जाना
सत्यभामा द्वारा स्यमन्तक मणि की कथा सुनाया जाना
कालिन्दी द्वारा यह बताया जाना कि भगवान् के चरणकमलों का
स्पर्श करने के लिए उसने किस तरह प्रार्थना की थी
सत्या द्वारा यह बताया जाना कि उसे पाने के लिए
कृष्ण ने किस तरह सात साँड़ों को परास्त किया
लक्ष्मणा द्वारा बताया जाना कि किस तरह उसका पाणिग्रहण

करने के लिए कृष्ण ने मत्स्य-भेद किया
''केवल मत्स्य का प्रतिबिम्ब दिखता था''
''अनेक राजाओं ने हाथ आजमाये किन्तु असफल रहे''
''अन्त में कृष्ण ने अपने तीर से मछली को बेधकर
धरती पर गिरा दिया''
''मैंने कृष्ण को विजयमाल पहनाई''
''कृष्ण ने अपने सारे ईर्ष्यालु प्रतिद्वन्द्वियों को हराया''
रोहिणी द्वारा बतलाया जाना कि कृष्ण ने किस तरह उन्हें
तथा, अन्य कुमारियों को भौमासुर से छुड़ाकर
उनके साथ विवाह किया
रानियों की एकमात्र इच्छा कि कृष्ण के चरणकमलों की धूल मिले

अध्याय चौरासी

कुरुक्षेत्र में ऋषियों के उपदेश

अध्याय का सारांश
कुरुक्षेत्र में श्रील व्यासदेव, नारद मुनि तथा अनेक
अन्य महर्षियों का आगमन
कृष्ण बलराम तथा अन्य अग्रणियों द्वारा ऋषियों की पूजा
मुनियों को सम्बोधित करते हुए कृष्ण का कथन,
''हम सामान्यजनों को आप जैसे महापुरुषों का दर्शन कैसे हो सकता है?''
''विद्वान मुनिगण क्षणमात्र सेवा करने वालों के पापों को नष्ट कर देते हैं''
''महर्षियों की उपेक्षा करने वाला गधा है''
भगवान् कृष्ण के आचरण से मुनिगण चकित
अपने भक्तों की रक्षा करने तथा दुष्टों को दण्ड देने के लिए
कृष्ण सतोगुण का रूप धारण करते हैं
स्वयं कृष्ण चरम आशीर्वाद हैं
मुनियों द्वारा भगवान् के चरणकमलों का महिमागान
वसुदेव द्वारा मुनियों से पूछना कि कर्म से मुक्त
कैसे हुआ जा सकता है?
वैदिक यज्ञों द्वारा विष्णु-पूजन की मुनियों की संस्तुति
पुत्ररूप में कृष्ण प्राप्त होने के लिए मुनियों द्वारा वसुदेव की प्रशंसा
वसुदेव तथा उनकी पत्नियों द्वारा यज्ञ की तैयारी
वसुदेव द्वारा विविध यज्ञों का सम्पन्न किया जाना और पुरोहितों को दक्षिणा देना
वसुदेव द्वारा सभी उपस्थितों को भव्य भोजन खिलाकर और उपहार देकर सम्मान करना
सबों के विदा होने पर नन्द, कृष्ण, बलराम तथा अन्यों का कुछ और काल तक ठहरना
वसुदेव द्वारा नन्द से क्षमा याचना कि कंस के शासनकाल में वे उनकी सहायता नहीं कर पाये
कृष्ण, बलराम, वसुदेव तथा अन्यों के प्रेम में बँधकर नन्द का

कुरुक्षेत्र में तीन मास तक रहते जाना
नन्द तथा गोपों का केवल गोविन्द के चरणकमलों का
ध्यान करते हुए वृन्दावन के लिए प्रस्थान
अध्याय पचासी
कृष्ण द्वारा वसुदेव को उपदेश दिया जाना तथा देवकी-पुत्रों की वापसी
अध्याय का सारांश
वसुदेव द्वारा कृष्ण तथा बलराम की भगवान् रूप में स्तुति
''हे प्रभु! सर्वप्रथम आपने यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड रचा और
तब आप उसमें प्रविष्ट हुए''
''आप में चन्द्रमा की चमक तथा अग्नि का तेज हैं''
''आप इन्द्रियों द्वारा उनके विषयों को प्रकट करने की शक्ति हैं''
''जो अज्ञानी हैं, वे ही आपको अपना परम गन्तव्य नहीं मानते''
''आप हमारे पुत्र नहीं अपितु सर्वेश्वर हैं''
कृष्ण द्वारा अपने पिता के वत्सल भाव को वापस लाना
देवकी द्वारा अपने मृतपुत्रों को वापस लाने के लिए
कृष्ण तथा बलराम से याचना
कृष्ण तथा बलराम का बलि द्वारा शासित सुतल लोक में जाना
बलि द्वारा दोनों प्रभुओं का भव्य सत्कार
बलि द्वारा कृष्ण और बलराम का महिमागान
''आपके अनेक पुराने शत्रुओं ने घृणा से अपने मनों को
आपमें लीन करके सिद्धि प्राप्त की''
बलि द्वारा प्रभु की कृपा की याचना
देवकी के छह पुत्रों को लेकर दोनों प्रभुओं का घर के लिए विदा होना
देवकी अपने दीर्घकाल से बिछुड़े पुत्रों को पाकर स्नेहाभिभूत
छहों पुत्रों का देवकी का स्तनपान करके स्वर्गलोक के लिए प्रयाण
श्रोताओं के लिए आशीर्वाद
अध्याय छियासी
अर्जुन द्वारा सुभद्रा-हरण तथा कृष्ण द्वारा अपने भक्तों को आशीर्वाद दिया जाना
अध्याय का सारांश
संन्यासी का वेश धर कर अर्जुन का द्वारका जाना
बलराम द्वारा वेस बदले अर्जुन को अपने घर बुलाना
अर्जुन तथा सुभद्रा एक दूसरे को देखकर कामोन्मुख
उत्सव के समय अर्जुन द्वारा सुभद्रा हरण
कृष्ण द्वारा शान्त किये जाने पर बलराम द्वारा वर-वधु को प्रचुर दहेज दिया जाना
अपने प्रिय भक्तों श्रुतदेव तथा बहुलाश्व को देखने के लिए
कुछ मुनियों के साथ मिथिला के लिए कृष्ण द्वारा प्रस्थान

मिथिला के मार्ग में विभिन्न राज्यों के वासियों को अपनी चितवन से आशीर्वाद देना
मिथिला में श्रुतदेव तथा बहुलाश्व द्वारा भगवान् को प्रणाम करके
उन्हें अपने घर आने का आमंत्रण
भगवान् कृष्ण द्वारा दो रूपों में विस्तार तथा दोनों भक्तों के यहाँ एक ही समय जाना
पुलकित बहुलाश्व द्वारा कृष्ण तथा मुनियों का सत्कार एवं पूजा करना
बहुलाश्व द्वारा स्तुति
कृष्ण तथा मुनियों को कुछ काल रुकने तथा
आशीर्वाद देने के लिए बहुलाश्व का आमंत्रण
श्रुतदेव द्वारा कृष्ण तथा मुनियों का बहुलाश्व जैसा ही सत्कार
श्रुतदेव द्वारा स्तुति
भगवान् द्वारा साथ आये मुनियों की प्रशंसा
''ब्राह्मण जन्म से ही समस्त जीवों में श्रेष्ठ''
''मूर्खजन ही विद्वान ब्राह्मणों की उपेक्षा करके
मेरे अर्चाविग्रह की पूजा करते हैं।''
श्रुतदेव तथा बहुलाश्व दोनों को दिव्य चरमगति की प्राप्ति

अध्याय सत्तासी

साक्षात् वेदों द्वारा स्तुति

अध्याय का सारांश
राजा परीक्षित द्वारा शुकदेव गोस्वामी से पूछा जाना कि किस तरह
वेद परम सत्य का प्रत्यक्ष वर्णन कर सकते हैं
परमेश्वर द्वारा आत्माओं के भौतिक आवरण का
उनके चरम लाभ हेतु प्रदर्शन
नारद मुनि का श्रीनारायण ऋषि के आश्रम जाना
जनलोक में एक बार सम्पन्न यज्ञ के समय परीक्षित का यह प्रश्न उठाया गया था
श्री सनन्दन द्वारा बताया जाना कि किस तरह
ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के समय साक्षात् वेदों ने भगवान् को जगाया
श्रुतियों द्वारा स्तुति, ''हे अजेय! जय हो, जय हो''
''वेद अपने सारे विचार, शब्द तथा कार्य आपको ही समर्पित करते हैं''
''विद्वान लोग आपके कथामृत में गहरे गोते लगाते हैं''
''अभक्तों का साँस लेना धौंकनी जैसा''
''विद्वान मुनियों द्वारा आपके चरणकमलों की पूजा
जिन्हें समस्त यज्ञ समर्पित किए जाते हैं''
''आपके लीलामृत सागर में डूबकर भाग्यवान भौतिक कष्ट से पार होते हैं''
''भक्ति में लगे शरीर का अपने आत्मा, मित्र तथा प्रिय की तरह आचरण करना''
''पदार्थ से आत्मा की उत्पत्ति का विचार अज्ञान का परिणाम''
''यह जगत अपने स्रष्टा भगवान् से अभिन्न, जो इसी में प्रविष्ट हो गए''

''आपके भक्त साक्षात् काल के सिर पर पाँव रखते हैं''
''आपकी माया की कार्यशैली को जानने वाला विवेकी व्यक्ति
आपकी असली सेवा करता है''
''अपने शरणागत के समक्ष आप परमात्मा रूप में प्रकट होते हैं''
''यह ब्रह्माण्ड आपके भीतर दृष्टिगोचर प्रतीत होता है''
''इन्द्रियतृप्ति के लिए योगाभ्यास करने वाले कष्ट उठाते हैं''
''हम श्रुतियाँ आपको अपने अन्तिम निर्णय के रूप में प्रकट करके ही धन्य होती हैं''
वेदों की स्तुतियों की समाप्ति पर विचार करके
नारद मुनि का भगवान् कृष्ण को नमस्कार करना
निडर होने के लिए भगवान् हरि का स्मरण

अध्याय अट्ठासी

वृकासुर से शिवजी की रक्षा

अध्याय का सारांश
तपस्वी शिव के पूजकों को ऐश्वर्य तथा ऐश्वर्यवान्
विष्णु के पूजकों को निर्धनता क्यों?
शुकदेव गोस्वामी द्वारा राजा परीक्षित से विरोधाभास का बताया जाना
भगवान् कहते हैं, ''यदि मैं किसी पर विशेष कृपा करता हूँ
तो धीरे धीरे मैं उसकी सम्पत्ति हर लेता हूँ''
''ऐसा दीन तथा विक्षिप्त आत्मा मेरे भक्तों को
मित्र बनाता है, जिससे मेरी दया जागती है''
शीघ्र वर के लिए वृक द्वारा शिव की पूजा
वृक द्वारा आत्महत्या का प्रयास, किन्तु शिवजी द्वारा उसकी रक्षा
शिव का वृक को वरदान कि यह जिसका भी
अपने हाथ से स्पर्श करेगा, वह मर जायेगा
वृक द्वारा शिव का सारे ब्रह्माण्ड में पीछा किया जाना
ब्रह्मचारी वेश बनाकर वैकुण्ठ में विष्णु द्वारा वृक का ठगा जाना
विष्णु द्वारा शिव का उपहास तथा वृक को
अपने वरदान की अपने ऊपर परीक्षा करने की सलाह
वृक का अपने सिर पर हाथ रखना और
वज्रपात की भाँति उसका खण्ड खण्ड होना
श्रोताओं को आशीर्वाद

अध्याय नवासी

कृष्ण तथा अर्जुन द्वारा ब्राह्मण पुत्रों का वापस लाया जाना

अध्याय का सारांश
भृगुमुनि को यह निश्चित करने का काम सौंपा गया
कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव में सबसे बड़े कौन?

भृगु द्वारा अपमानित करने पर ब्रह्मा अपना क्रोध प्रकट नहीं होने देते
भृगु द्वारा अपने भाई शिव का अपमान तथा उन्हें क्रुद्ध करना
भृगु द्वारा विष्णु के वक्षस्थल पर पादप्रहार किये जाने पर भी उनके द्वारा सत्कार किया जाना
मुनियों द्वारा भृगु के कथन को सुनकर विष्णु की श्रेष्ठता के लिए अनुभूति
श्रोताओं के लिए आशीर्वाद
द्वारका में ब्राह्मण पत्नी के नवजात शिशु की तत्क्षण मृत्यु
ब्राह्मण द्वारा राजा उग्रसेन की निन्दा
अर्जुन द्वारा ब्राह्मण पुत्रों की रक्षा का वचन
अर्जुन द्वारा ब्राह्मण के घर के चारों ओर बाणों का पिंजरा बनाया जाना
दसवें पुत्र के विलुप्त होने पर ब्राह्मण द्वारा अर्जुन का उपहास
अर्जुन द्वारा खोये पुत्र की सर्वत्र खोज
कृष्ण द्वारा अर्जुन को रथ पर बिठाकर पश्चिम दिशा में रवाना
अँधेरे में सुदर्शन चक्र द्वारा प्रकाश उत्पन्न किया जाना
अर्जुन का ब्रह्मज्योति देखना
एक भव्य महल में महाविष्णु का अनन्तशेष पर शयन
महा विष्णु का कथन ''मैं आप दोनों का
दर्शन करना चाह रहा था, इसलिए ब्राह्मण के पुत्र को यहाँ लाया''
ब्राह्मण के पुत्रों समेत कृष्ण तथा अर्जुन का द्वारका लौटना
राजा युधिष्ठिर तथा अन्य पवित्र राजाओं द्वारा
धर्मपालन के लिए भगवान् द्वारा आश्वासन

अध्याय नब्बे

भगवान् कृष्ण की महिमाओं का सारांश

अध्याय का सारांश
अपनी रानियों के साथ कृष्ण द्वारा जलक्रीड़ा
भगवान् तथा उनकी रानियों का एक दूसरे पर हर्षपूर्वक जल छिड़कना
रानियों का भावमय समाधि में प्रवेश
रानियाँ प्रार्थना करती हैं, ''हे कुररी पक्षी,
क्या कृष्ण की चितवनों से तुम्हारा हृदय बिंधा हुआ है?''
''हे चन्द्रमा, तुम्हें घोर यक्ष्मा रोग लग गया प्रतीत होता है''
''हे पर्वत, क्या तुम भी हमारी ही तरह
भगवान् कृष्ण के चरणों को अपने वक्षस्थल पर रखना चाहते हो?''
''हे हंस, हमें कृष्ण का कोई समाचार सुनाओ''
कृष्ण की रानियों का सौभाग्य अर्वणनीय
कृष्ण के पुत्रों में से अठारह पुत्र विख्यात महारथ थे
यदुओं के गदायुद्ध से बचने वालों में कृष्ण के प्रपौत्र वज्र भी एक
राजा उग्रसेन के असंख्य सेवक

लक्ष्मीजी एकमात्र कृष्ण की हैं
भगवान् कृष्ण की जय हो
श्रोताओं को आशीर्वाद
परिशिष्ट
लेखक परिचय